अब इन्हें कैसे बैठाऊँ?

गजेन्द्र कुमार देवांगन



जैसे ही स्कूल शब्द का जिक्र होता है हमारे मन-मस्तिष्क में एक भवन, जिसमें अनेक बच्चे और शिक्षक होते हैं, की तस्वीर उभर आती है। और जब हम स्कूलों की अकादमिक प्रक्रियाओं की बात करते हैं तो हमारे सामने एक कक्षा का चित्र होता है जिसमें शिक्षक बच्चों के सामने की ओर तथा बच्चे क्रम से पंक्ति बनाकर बैठे हुए होते हैं। यह सही भी है क्योंकि हम ज़्यादातर इसी तरह की कक्षाओं को देखते आए हैं। कक्षा की इस तरह की बैठक व्यवस्था में प्रायः सभी प्रकार की गतिविधियाँ सम्पन्न भी हो जाती हैं, जैसे निर्देश देना, कहानी-कविता सुनना-सुनाना, चर्चा-परिचर्चा करना, पढ़ना–लिखना, मूल्यांकन व सामग्रियों का प्रदर्शन आदि। पंक्तिबद्ध बैठक की अपनी सुविधा के साथ कुछ कमियाँ भी होती हैं जिससे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मैं यहाँ कमियों पर चर्चा नहीं करूँगा बल्कि पंक्तिबद्ध बैठक व्यवस्था के विकल्प क्या हो सकते हैं, इस पर कुछ कहने की कोशिश करूँगा। यदि हम कक्षाओं में बच्चों के बैठने की व्यवस्था पर थोड़ा ध्यान देते हैं तो सीखने-समझने की क्षमता पर असाधारण प्रभाव पड़ता है, ख़ास करके स्कूल की शुरुआती कक्षाओं - कक्षा पहली व दूसरी में। भाषा शिक्षक के रूप में मुझे भाषाई कौशलों के विकास हेतु अलग-अलग तरह की गतिविधियों पर काम करने का अवसर मिलता रहा है।

शिक्षण के शुरुआती दिनों में मेरा भी तरीक़ा कुछ अलग नहीं था। परन्तु नियमित कार्य के दौरान तथा कक्षागत चुनौतियों के हल खोजते हुए कुछ अनुभव हुए जिसके आधार पर मैंने कक्षा में अलग-अलग गतिविधियों के लिए कुछ ख़ास तरीक़े की बैठक व्यवस्थाओं में बैठाना शुरू किया। निश्चित रूप से कक्षा में इसका काफी अच्छा प्रभाव रहा। इन्हीं में से कुछ अनुभवों को मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

1. **गोलाकार बैठक :** सामान्य बातचीत, निर्देश देने, नियम बनाने व चर्चा करने के लिए बच्चों के साथ एक बड़े गोले में बैठना अच्छा और सुविधाजनक होता है। इससे प्रत्येक श्रोता-वक्ता के बीच सीधा नेत्र सम्बन्ध बन पाता है। सबको एक-दूसरे को देखते-सुनते बनता है। अपनी बात रखने-सुनने में आसानी होती है। इस तरह की बैठक में कोई भी बच्चा न पहले होता है न बाद में। आगे-पीछे की समस्या ही ख़त्म हो जाती है। शिक्षक और विद्यार्थी सभी एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं।

2. **अर्धवृत्ताकार बैठक :** कहानी-कविता सुनने-सुनाने की गतिविधि के लिए अर्धवृत्ताकार आकृति में बैठना उपयुक्त होता है। इस गतिविधि में हाव-भाव व चेहरे के भाव-प्रदर्शन का बहुत महत्त्व होता है। इस गतिविधि के दौरान वक्ता की अपेक्षा होती है कि प्रत्येक श्रोता उसकी ओर ध्यान से देखे और सुने तथा कहानी-कविता के उन भावों को भी समझे जिन्हें हाव-भाव से प्रस्तुत किया जा रहा हो, जिन्हें शब्दों से व्यक्त करना सम्भव नहीं होता है। कहानी-कविता के दौरान यदि हम चित्र, चार्ट या कोई टीएलएम प्रदर्शित करते हैं तो उसे प्रत्येक बच्चे को देखने की इच्छा होती है, ऐसे में इस तरह की बैठक अधिक सुविधाजनक होती है। बच्चों की संख्या अधिक होने पर अर्धवृत्ताकार बैठक की दो या अधिक पंक्तियाँ एक के पीछे एक बनाई जा सकती हैं।

3. **'यू' आकार की बैठक :** कक्षा में जब हम टीएलएम के द्वारा पठन, लेखन सामग्रियों के साथ काम करते हैं तो सबसे पहले हमें की जाने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है। जैसे, कहानी आधारित चित्रों को घटनाक्रम के अनुसार व्यवस्थित करना, शब्द–चित्र जोड़ी बनाना, शब्द-वाक्य पट्टियों को क्रम से जमाना आदि। ऐसे में हमारी इच्छा होती है कि कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी प्रक्रिया को ध्यान से देखे और सुने। इस तरह की गतिविधियों के लिए 'यू' आकार में बैठना उचित होता है। इस तरह की बैठक में बच्चे, शिक्षक के सामने 'यू' आकार में बैठे हुए होते हैं। इससे सभी बच्चे कार्य को ठीक से देख पाते हैं। साथ ही शिक्षक को सामग्री रखने, प्रदर्शित करने हेतु पर्याप्त जगह भी मिल पाती है। इससे पहले इस प्रकार की गतिविधियों में सभी बच्चों को देखने में असुविधा होती थी।

4. **सघन बैठक** : कहानी सुनाने की गतिविधि के दौरान अनेक ऐसे मौक़े भी आते हैं जब बच्चे एक-दूसरे के काफ़ी क़रीब बैठते हैं। वे एक-दूसरे से सटे हुए बैठते हैं। उनके पैर आपस में जुड़े हुए होते हैं। उनके बीच ही मेरा भी बैठना हुआ है। इस प्रकार की बैठक का कोई विशेष उद्देश्य

नहीं रहा है, बस एक स्थिति होती है जिसमें बच्चों में शिक्षक के करीब बैठने की होड़ होती है, उसे पूरा करना। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि छोटे बच्चे शिक्षक के जितना हो सके पास बैठना चाहते हैं। उनकी इच्छा होती है कि शिक्षक उन्हें स्पर्श करें, अधिक-से-अधिक बात कर सकें, साथ ही वे शिक्षक द्वारा लाई सामग्रियों को जल्दी-से-जल्दी देख सकें। इस तरह की बैठक से हम अधिक बच्चों के पास हो सकते हैं। इस तरह की बैठक का अपना अलग आनन्द भी है। इसमें बच्चे क़रीब होते हैं, अतः हमें बोलने में कम ऊर्जा लगती है। हम घटना अनुसार अपनी आवाज़ में अधिक आरोह-अवरोह तथा हाव-भाव का प्रदर्शन कर पाते हैं। बच्चे भी अधिक ध्यान से सुनते हैं। परन्तु इस प्रकार से ज़्यादा देर तक बैठना सम्भव नहीं होता है।

5. **समूह बैठक :** अक्सर पहली, दूसरी की कक्षाओं में चित्र बनाने, चित्र पर चर्चा करने, शब्दों-वर्णों को क्रम से सजाने जैसे काम होते रहते हैं। ऐसे कामों को छोटे समूहों में कराना सुविधाजनक होता है। यह बच्चों को आपस में साथ-साथ सीखने का अवसर प्रदान करता है परन्तु इसके लिए ध्यान रखना होता है कि समूह में कितने बच्चे होने चाहिए। मैंने ऐसे कामों को कक्षाओं में नियमित रूप से कराया है। इस तरह के कामों के लिए लगभग 4-5 बच्चों को एक साथ रखकर समूह-काम कराना अच्छा रहा है। यदि हमारी कक्षाओं में 30 बच्चे हैं, तो 5-5 बच्चों के 6 समूह बनते हैं जिन्हें 2 पंक्तियों में बैठाकर काम करना सहज होता है।

6. **ग्रीनबोर्ड/ब्लैकबोर्ड की ओर मुँह करके बैठना :** शिक्षक को अधिकांश काम ग्रीनबोर्ड/ ब्लैकबोर्ड पर करना होता है, ऐसे में आवश्यक होता है कि बच्चे सहजता से बोर्ड को देख सकें। बोर्ड और बच्चों के बीच की दूरी उचित हो, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का बैठक स्थान अनुकूल जगह पर हो। इन बातों के ध्यान के साथ ही बच्चे-से-बच्चे के बीच की दूरी भी उचित हो। बच्चे बहुत पास-पास होने से थोड़ी अव्यवस्था भी होती है, वहीं अधिक दूरी होने से हर बच्चे के काम को सतत देख पाना मुश्किल होता है। मैंने बोर्ड से देखकर लिखने व पढ़ने दोनों कामों के लिए अलग-अलग तरह से बच्चों को बैठाने का प्रयास किया है। जैसे पढ़ने के कामों के दौरान बच्चों के बीच की दूरी थोड़ी कम और लिखने के कामों के लिए दूरी थोड़ी अधिक। इतनी कि बच्चों को कॉपी-स्लेट आराम से रखते बने, उनके शरीर आपस में न टकराएँ। यदि गतिविधि पहले से तय हो तो उचित बैठक व्यवस्था बनाने में सरलता होती है। मैं इस तरह की व्यवस्था में पंक्तिबद्ध होकर ही बैठने पर बहुत अधिक दृढ़ नहीं हूँ। मेरा मानना रहा कि बच्चे आराम से बैठें, सबको बोर्ड का काम स्पष्टता से दिखे और मैं भी उनको स्पष्टता से देख सकूँ। इस बात का ज़रूर ध्यान रखा कि जब भी इस तरह से बैठना हो तो सभी बच्चों का स्थान बदलता रहे। कोई एक जगह ही उनके लिए तय नहीं हो जाए।

7. **स्तरानुसार बैठक :** कक्षाओं में एक स्थिति यह भी होती है जिसमें कुछ बच्चों के सीखने-समझने के लिए हमें अलग तरह के काम करने या विशेष काम देने की आवश्यकता होती है। कई बार इन बच्चों के अलग समूह बनाकर काम करते हैं। इनकी संख्या 5–6 या अधिक होने पर 2-3 बच्चों के छोटे समूह बनाकर काम किए गए हैं। इन्हें कक्षा की खाली और बड़ी जगह में स्वतंत्र रूप से बैठाना अच्छा होता है। इसमें दो मुख्य समूह व समूहों के कुछ उप-समूह हो जाते हैं।

मैंने अनुभव किया है कि छोटे बच्चों की कक्षाओं में एक ही कालखण्ड में अलग-अलग प्रकार की दो-या-दो से अधिक प्रकार की बैठक व्यवस्थाएँ हो जाती हैं। बैठक व्यवस्था में परिवर्तन भी एक चुनौती भरा काम है। कई बार लगता है कि बच्चों को इस तरह बार-बार स्थान परिवर्तित करके बैठाने से तो हमारे कालखण्ड का बहुत समय निकल जाएगा और यह सच भी हो सकता है यदि हम इसे नियमित व्यवहार में न लाएँ। इस तरह की व्यवस्था बनाना ज़मीन में बैठने वाले बच्चों के लिए आसान होता है। प्रायः कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चों को ज़मीन में दरी या गद्दे बिछाकर बैठाना उचित होता है। ज़मीन में बैठने से बैठक व्यवस्था शीघ्रता से बनती है क्योंकि टेबल-कुर्सी को सरकाने में लगने वाले समय की बचत होती है। साथ ही शोर से बचा जा सकता है।

इस प्रकार से उचित और गतिविधि आधारित बैठक होने से बच्चों के साथ काम करना सहज होता रहा है। बच्चों के सीखने पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव को मैंने अनुभव किया है। मैं अपने अनुभवों से प्रेरित हुआ हूँ और बच्चों के साथ सहजता से काम करना सम्भव हुआ है। अब तो नियमित रूप से इस तरह से बैठक व्यवस्था बनाकर काम करना कक्षागत प्रक्रिया का आवश्यक अंग बन गया है।

गजेन्द्र कुमार देवांगन अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में पिछले छह वर्षों से शिक्षक हैं। इससे पहले वे छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालय में 12 वर्ष तक शिक्षक रहे हैं। बच्चों के लिए कविता-कहानी लिखना, संगीत सुनना और चित्रकारी करना उन्हें अच्छा लगता है। उनसे gajendra.dewangan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।